प्रिय बन्धु जन,

आज हम लोग परम पूज्य बाबू जी महाराज (परम पूज्य डा. श्यम लाल सक्सेना) द्वारा स्थापित किये गये गाज़ियाबाद के 47वें भन्डारे में हर वर्ष की भांति भिन्न–भिन्न प्रान्त से सभी प्रेमी जन पधारे हुये हैं।

इस सेवक (डा. वी. के. सक्सेना) ने अपने जीवन के 77 वर्ष में प्रथम 28 वर्ष अपने परम पूज्य गुरुदेव डा. श्री कृष्ण लाल जी की पुण्य सोहबत एवं स्नेह छत्रछाया में तथा 55 वर्ष सोहबत स्नेह अपने आदर्श पिता तथा मुर्शिदे कामिल परम पूज्य डा. श्याम लाल सक्सेना के सानिध्य से जो कुछ पाया , जो कुछ सीखा तथा जो कुछ अनुभव से समझ कर निष्कर्ष निकाला है वह आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ।

हमारे सन्तमत के अधिष्ठाता परम सन्त श्री राम चन्द्र जी सहाय, परम पूज्य लाला जी महाराज ने एक बार फरमाया था कि गोकि उन्होंने बवख्त सत्संग एवं भन्डारा फरदन फरदन इश्वर प्राप्ति के साधन सभी प्रेमी जनों को बताया है पर कुछ दिक्कतों के कारण उसको कलमबद्ध न किया जा सका जिससे जैसा वो चाहते थे वैसी विद्या लोगों को समझ न आ सकी। इसी संदर्भ में उनके सभी प्रिय शिष्यों ने अपनी अपनी तरह से उनके सिद्धांतो को पुस्तक का रूप दिया है। मैं भी अपना फर्ज समझता हूँ कि उन महानुभाव के परमार्थी अनुभव व सिद्धांतों को एक अपने निजी अनुभव मूल रूप में लिख कर आप सब तक पहुचाऊँ। ये परमार्थ का सार है सिद्धांत नहीं, अनुभव है दर्शन नहीं।

धर्म :–

धर्म की सबसे सूक्ष्म परिभाषा ईश्वर का सच्चा ज्ञान है। शृष्टि की रचना के साथ ही साथ धर्म भी अवतरित हुआ है। इससे धर्म तो वास्तव में सनातन धर्म ही है जिसकी न आदि है न अंत है, जिसके संक्षेप में निम्नलिखित बिन्दू हैं:

1) हर मनुष्य को यह पूर्ण विश्वास हो कि ईश्वर है, केवल वहीं सम्पूर्ण शृष्टि का रचियता है, वहीं सर्वशक्तिमान तथा अनन्त है, वहीं उसका विनाश करने की शक्ति रखता है अर्थात इस सम्पूर्ण शृष्टि का संचालन केवल उस ईश्वर के ही हाथ में है। संसार की प्रत्येक छोटी बड़ी घटना उसी के संचालन से है।

2) ईश्वर केवल एक ही है उसका न कोई नाम है न कोई रूप है। उसको नाम एवं रूप संतों ने उसके गुणों के आधार पर दिये हैं। वह ईश्वर बीज रूप से हमारे घट के अन्दर आत्मा के रूप में विराजमान है। इसी से ईश्वर के प्राप्ति के रास्ते को घट मार्ग कहते हैं। मनुष्य उसकी सबसे श्रेष्ठ रचना है क्योंकि केवल मनुष्य को ही उसने ज्ञान दिया है। ज्ञान पशुओं, पक्षियों एवं वनस्पति को भी होता है, यह विज्ञान द्वारा सत्यापित कर दिया गया है पर उनका ज्ञान सहज ज्ञान है । मनुष्य को ईश्वर ने श्रेष्ठतम विवेक दे कर संसार में भेजा है जिसके प्रयोग से वह अपने जीवन को सार्थक कर के सदा सदा का विश्राम पा जाये, अपने अंशी ईश्वर में लीन हो जाये।

3) हर ज्ञान के लिये चाहे वह दुनिया का हो या दीन का गुरु की आवश्यकता पड़ती है। गुरु का अर्थ है जो आपको गाइड करे, सतगुरु से आशय है जो आपको अपनी आत्मा का साक्षत्कार करा सके। इसी कारण रामायण में गोस्वामी तुलसी दास ने " नर रूप हरि " की संज्ञा से गुरु का संबोशन किया है

अर्थात गुरु नर रूप में ईश्वर है और इसी से उन्होंने गुरु की वन्दना प्रथम की है। वहीं एक ऐसी हस्ती है जो आपको आत्मा का साक्षात्कार करा सकती है। हर व्यक्ति के आत्मा के 3 गुण हैं :

(१) अनन्त, उसका कभी नाश नहीं होता, Ever lasting
(२) सर्व ज्ञान, पूर्ण ज्ञान, All knowledge
(३) पूर्ण आनन्द, प्रेम स्वरूप, All Bliss
गुरु में गुण वही हैं परन्तु सूक्ष्म रूप से।

ईश्वर ने तथा सभी संतो ने उसके प्राप्ति के ज्ञान के लिये गृहस्थ जीवन को श्रेष्ठतम माना है। भगवान राम ने जो कि अवतार पुरुष थे उन्होंने भी गृहस्थ जीवन को ही अपने जीवन का आधार बनाया। मानवीय एवं ईश्वरीय गुणों के विकास के लिये गृहस्थी एक सम्पूर्ण पाठशाला है।

मनुष्य जीवन का मुख्य कर्तव्य :–

मनुष्य जीवन के मुख्य कर्तव्य यह है कि वह समय के किसी जीवित संत सतगुरु की खोज करे और जब वह मिल जाये तब पूरी आस्था विश्वास के साथ पूरी लगन निष्ठा से उसकी शरण में जाये और उन्ही का हो जाये चाहे उसे इस कार्य में कितने जन्म लग जायें पर ईश्वर को सदा सच्चे दिल से याद करते रहो और गिड़गिड़ाते रहो कि हे प्रभो आप कब मिलेंगे। ईश्वर बड़े दयालु हैं, जब उनकी दया होगी तभी तुम्हें सतगुरु मिलेंगे और जब सतगुरु की अपार दया होगी तभी तुम्हें ईश्वर मिलेंगे।

सच्ची पूजा क्या है, इसका तरीका क्या है :–

पूजा या साधना का सच्चा स्वरुप गुरु चरणों में समर्पण है जिसका सीधा अर्थ है उनके ख्याल को 24 घन्टे अपने हृदय में बसाना, उनके स्वरुप का जीवन्त अनुभव करना, उनके विचारों का आपके मन में उतरना और हर क्षण उनकी याद और ख्याल का मन में बसे रहना ही सच्ची साधना है। उस साधना का वास्तविक क्षेत्र यहीं सत्संग है जहां आपको वह सतगुरु दया करके अपने स्वरूप का भान करा देता है, तभी आपको उस पर विश्वास होता है। सत्संग से विश्वास में दृढ़ता आती है और दृढ़ विस्वास ही प्रेम में परिवर्तित हो जाता है। जब उस प्रेम में पराकाष्ठा हो जाता है तब समझ लीजिये आप को सच्ची पूजा का गूढ़ रहस्य समझ में आ गया। जैसे भी हो गुरु से सच्चा प्रेम करना ही सच्ची पूजा है। तरीका यह है कि अपने मन को हर समय गुरुदेव में लगाये रहने के लिये ॐ मंत्र का जाप करें। ॐ मंत्र सर्वोत्तम मंत्र है क्योंकि उसमें इन्द्रीयों का प्रयोग नहीं होता है , यह स्वाँस से संचालित होता है। इस कारण जीवन के अंतिम स्वाँस तक यह मंत्र चलता है। यहीं कारण है कि शास्त्र में हर मंत्र का आरम्भ ॐ से ही होता है और अंत ॐ शांति से।

याद और ख्याल का अंतर व लाभ :–

याद पूजा का प्रथम अंग है। याद का शाब्दिक अर्थ सुमिरन है। सुमिरन वहीं व्यक्ति कर सकता है जिसने सदगुरु की सोहबत उठाई हो। याद का अंग ही सोहबत है। कैसे रहते, कैसे बोलते, कैसा उनका चलना, हँसना, प्रेम से मिलना, स्वरूप यह सब याद या सुमिरन के अंग हैं। याद उसी व्यक्ति को आयेगी जिसने अपने सदगुरु का जीवन काल में सहज स्वरुप देखा है। यह सर्वोत्तम भक्ति है।

सूफी संतो ने और सभी संतो ने तथा गोस्वामी तुलसी दास ने भी राम चरित मानस में नवधा भक्ति के प्रसंग में लिखा है **"प्रथम भगति संतन कर संगा"**। यह संतो का संग ही सोहबत है और यही सोहबत याद का पुण्य क्षेत्र है।

ख्याल का अर्थ है सोच। जब कोई संत या व्यक्ति अपने सदगुरु की चर्चा इतनी तल्लीनता से करे कि लगे कि हम स्वयं उनको अनुभव कर रहे हैं। कल्पना की पराकाष्ठा ही ख्याल है। आरम्भ में हम कल्पना करते हैं जब हम उनकी चर्चा सुनते हैं और वहीं कल्पना ख्याल करते करते जीवंत रूप ले लेती है और जब हम किसी महापुरुष या संत की चर्चा सत्यता और श्रद्धा से सुनते हैं और उनका सच्चाई से ख्याल करते हैं तो उन महापुरुष और हमारे ख्याल के बीच में एक ऐसा सुदृढ़ सम्बंध बन जाता है कि वह हमें दर्शन भी देते हैं और दया करके हमारे साधना में हमारे गुरुदेव के माध्यम से बड़ी सहायता भी करते हैं। इसीलिये गोस्वामी तुलसी दास ने दूसरी भक्ति का स्थान **"दूसरी रति मम कथा प्रसंगा"** ख्याल को भी दिया है। वाल्मीकी जी के प्रसंग में महर्षी वाल्मीकी ने कहा है **"हे राम आप उनके हृदय में बसिये जिनके कान सदा आपकी चर्चा सुनते हुये तृप्त नहीं होते"**।

सदगुरु के स्वरूप और ॐ के नाम और ख्याल एवं सुमिरन से बहुत आध्यात्मिक लाभ होता है। जिस समय सदगुरु ईश्वर के ध्यान में उससे मिला बैठा रहता है तो उसके प्रभाव में आने वाला स्थान पवित्र तथा उसके सम्पर्क में आने वाले उस आत्मिक औरा (Aura) के प्रभाव से बहुत प्रभावित होते हैं और सबको बहुत लाभ होता है, अधिकारी व्यक्ति को तो होता ही है और वह उसका अनुभव भी करता है पर अनाधिकारी व्यक्ति को भी लाभ होता है यद्यपि वह उसका अनुभव नहीं कर पाता है। गुरु के स्वरूप के अमरत्व तत्व से साधक की आत्मिक उन्नति होती है और नाम के जाप से माया हमला नहीं कर पाती है। सीता जी जो स्वयं श्री राम भगवान की पत्नी थीं उन्होंने भी जब राम नाम की रेखा का त्याग किया रावण रूपी माया ने उन पर जबरदस्त हमला कर दिया और वह ईश्वर से दूर हो गयीं।

हमारे संतमत में गृहस्थी ही आधार है। गृहस्थ जीवन अति आवश्यक है। आने वाले सभी सूफी संतों तथा अन्य संतों ने भी इसको अति आवश्यक माना। हमारे सभी अवतारों ने भी गृहस्थ जीवन को ही अपनाया। गृहस्थी में यदि अपनी पत्नी, अपने बच्चे, अपने रिश्तेदार, अपने मित्र तथा अपनी सोसाइटी यह पाँच सहायक हो जायें तो परमार्थ की राह बहुत सरल हो जाती है। परंतु अनुभव बताता है और देखने में आया है कि इन्हीं पाँच की वजह से मनुष्य राह से बेराह हो जाता है। यह ऐसा पंचतंत्र है जो अच्छे अच्छे अभ्यासियो को भी ले डूबता है और वह इस पथ से गिर जाते हैं।

हमारे संतों ने इनको अनुकूल रखने के लिये कुछ बातें बताई हैं :

(1) गैर जिन्स की सोहबत से परहेज करें। गैर जिन्स का अर्थ है जो ईश्वर पर या सत्संग में विश्वास न रखते हों। ऐसे लोग चाहे वह रिश्तेदार ही क्यों न हों उनसे अलहदगी अख्तियार करें।

(2) एक जगह के लोग आपस में मिल कर हो सके तो रोज नहीं तो हफ्ते में एक बार जरूर मिल कर सत्संग करें। सत्संग बहुत आवश्यक है।

(3) सत्संगी भाई बहन अपने बच्चों की शादी सत्संग में करें शर्त यह हो यदि दोनों के विचार परमार्थी हों और बराबर की हैसियत वाले हों। इससे गृहस्थी की गाड़ी बहुत सहुलियत से चलती है और घर का वातावरण अच्छा रहता है।

(4) स्त्रियों के लिये सबसे उत्तम पूजा है कि वह घर में सुख शांति बनाये रखें और घर के बच्चों को अच्छे संस्कार दें, उनके घर से कोई उपासा न जाये। ऐसा कर के वह घर के वातावरण को परमार्थ के योग्य बनाती हैं। ऐसा परम पूज्य बाबू जी महाराज (डा. श्याम लाल सक्सेना) सदा कहते थे।

कुछ अन्य अनुभवी बातें जो परमार्थ के रास्ते में बहुत सहुलियत कर देती हैः

(1) मन को कभी खाली न रखें, उत्तम तो यहीं है कि उसे ईश्वर के काम में लगायें। यदि ऐसा न कर सकें तो अच्छे और दूसरे के भलाई के कार्यों में लगाये। परम पूज्य बाबू जी इसीको " **Think Good, Do Good and Be Good** " कहते थे अच्छा सोचो, अच्छा करो और अच्छे बन जाओ।

(2) सदा बहुत सकारात्मक (**Positive**) विचार रखें, कभी नकारात्मक (**Negative**) न सोचें।

(3) हर मनुष्य के पाँच मुख्य ऋण हैं, उसका कर्तव्य है कि वह इनका ऋण चुकाये, माँ बाप का ऋण, भाई बहन का ऋण, रिश्तेदारों का ऋण, दोस्तों का ऋण, सोसाइटी का ऋण, देश तथा जन्म भूमि का ऋण । यह ऋण धर्म शास्त्र के अनुसार चुकाना चाहिये। इन सब की सेवा करना, सुख दुख में जो जायज हो सहायता करना और सदा उनके बेहतरी के लिये सोचना या प्रार्थना करना ही ऋण का चुकाना है। हमारे गुरुदेव परम पूज्य ताऊ जी महाराज डा. श्री कृष्ण लाल जी तथा हमारे परम पूज्य बाबू जी डा. श्याम लाल जी को मैंने देखा है जो अपने माता पिता की अवहेलना करते थे उनकी तरफ अधिक तवोज्जह नहीं देते थे।

हर व्यक्ति को अपने स्वयं की विवेचना, व्यक्तिगत मूल्यांकन अर्थात **self assessment** करना चाहिये। दुनिया के हर मनुष्य में 6 अवगुण जरूर विद्यमान रहते हैं :

(१) काम	**(३) लोभ**	**(५)ईर्ष्या**
(२)क्रोध	**(४) मोह**	**(६)अहंकार**

यह 6 अवगुणों की मात्रा किसी में कम किसी में अधिक किसी में बहुत गुप्त रूप से रहती है पर पाये सब में जाते हैं। इन्हीं दोषों को समाप्त कर ईश्वरीय 6 गुणों को प्राप्त करना ही असली पूजा, असली परमार्थ, असली तप या पुरुषार्थ और वास्तव में धर्म है। वे ईश्वरीय गुण निम्नलिखित हैं :

(१) दया	**(३) दीनता**	**(५) सच्चाई**
(२) दान	**(४) क्षमा**	**(६) प्रेम**

यह अवगुण जिस क्रम में हैं उसी क्रम में छूटते हैं और ईश्वरीय गुणों के उदय का क्रम भी यहीं होता है। जैसे सबसे पहले दया का ही हृदय में उदय होगा तभी दान की स्थिति बन पाती है।

हमारे यहां हमारे अधिष्ठाता परम पूज्य लाला जी महाराज साहब ने प्रेम और सच्चाई पर ही जोर दिया। उनका कथन था कि " **जहां सब अंत करते हैं हम वहां से शुरु करते हैं।** " उनका रास्ता ही प्रेम का है। अपने गुरु से :

१) बेलौस प्रेम, Unconditional Love

२) पूर्ण विश्वास, Complete Faith

३) पूर्ण समर्पण, Complete Surrender होना चाहिये।

यहीं हमारे सिलसिले का आधार है।

हर मनुष्य को यह ज्ञान हो जाये कि यह दुनिया ईश्वर की है, हमसे पहले भी थी, हमारे बाद भी रहेगी। वहीं इसका मालिक है, वहीं उसका रचियता है, वहीं पालनकर्ता तथा वहीं विनाश एवं विध्वंस करने वाला है। वहीं पूजने योग्य है, वहीं सर्वशक्तिमान है। जो कुछ नेमतें उसने तुम्हें दिया है उसको गनीमत जानो और उसी पर संतोष करो। यहीं राजी ब रजा है। सदा यह देखो कि तुम क्या कर रहे हो, यह मत देखो कि दूसरा क्या कर रहा है। आप अपने काम के लिये उत्तरदायी है वह अपने, बेजरूरत क्यों चिन्ता करते हो।

अपने मन पर कभी भरोसा मत करो। सदा **circumstances**, परिस्थितियों पर ध्यान रखो, उन पर नियंत्रण रखो जिससे कोई अनहोनी जो धर्मशास्त्र के विरुद्ध हो ऐसा कार्य न हो जाये। हमारे गुरुदेव परम पूज्य ताऊ जी डा. श्री कृष्ण लाल जी कहा करते थे " **इस धोखेबाज मन पर बेटे कभी भरोसा मत करना, केवल अपने गुरुदेव पर भरोसा करना जिससे कोई गलती न हो जाये।** "

इस बहुमुल्य मनुष्य शरीर का महत्व एक बार समझ कर और दुनिया को अपने से अलग करते हुये असल लक्ष्य को प्राप्त कर हमेशा हमेशा की सुख शांति प्राप्त कर जो कि परम लक्ष्य हर एक के जीवन का है।

परम पूज्य बाबू जी महाराज (डा. श्याम लाल सक्सेना) का यह गुरु मंत्र है की :

१) बेटे फिजूल की बातें छोड़ कर लग लिपट कर इसी जीवन में अपना काम बना लो।

२) या तो किसी के हो जाओ या किसी को अपना बना लो।

३) Think Good, Do Good and Be Good अच्छा सोचो, अच्छा करो और अच्छे बनो।

ईश्वर आप सब का कल्याण करें।

विनीत :

डा. वी. के. सक्सेना

बी 1/26, सेक्टर 'के',

अलीगंज, लखनऊ।

फोन : 2745588

मोबाइल : 9335238479